

श्री जावेद अली खान (क्रमागत) : यह बिल, जो माननीय सदस्य ने यहां प्रस्तुत किया है, अगर यह पास भी हो जाता है तो मुझे नहीं लगता कि भारत आतंकवाद को रोकने की दिशा में कोई कारगर कदम उठा पाएगा। हम जानते हैं कि पाकिस्तान की तरफ से जो गतिविधियां हो रही हैं, वे हमारे देश के विरोध में हैं, हमारे देश को विखंडित करने के लिए हैं और हम अगर कोई कानून बनाकर, सख्त कानून बनाकर इस बात का ऐलान करते हैं, तो निश्चित रूप से हम इस बात पर अपनी सहमति व्यक्त करते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, संयुक्त राष्ट्र संघ में या दुनिया का जनमत बनाने में हमारे कूटनीतिक प्रयास विफल हो गए हैं और अब हम सारी उम्मीदें छोड़ चुके हैं, इसलिए हम पाकिस्तान को अब आतंकवादी राष्ट्र घोषित करना चाहते हैं। इससे हमारा कोई मकसद पूरा नहीं हो सकता। हमारा मकसद तब पूरा होगा, जब विश्व का जनमत पाकिस्तान को आतंकवादी गतिविधियां रोकने के लिए मजबूर करे। हम जानते हैं कि अकेले हमारे घोषित करने से, कि पाकिस्तान एक आतंकवादी राष्ट्र है या आतंकवाद का प्रायोजक राष्ट्र है, मसला हल नहीं होता - हम तो कर देंगे, लेकिन क्या दूसरे देश, क्या अमेरिका ऐसा करेगा? आजकल, जब से unipolar world हुआ है, यहां से दूसरी शक्ति का संतुलन जब से खत्म हुआ है, तब से कोई भी अंतर्राष्ट्रीय फैसला लेने के लिए या ऐसा फैसला लेने के लिए, जिसका अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव होता है, अमेरिका की तरफ सभी लोग नज़र उठाकर देखते हैं। हम घोषित कर देंगे, लेकिन क्या हम अमेरिका को मजबूर कर पाएंगे कि वह पाकिस्तान के खिलाफ इस प्रकार की आर्थिक नाकेबंदी या उसे मजबूर करने के प्रयास करे, जैसा हम करना चाहते हैं? अभी हाल ही के वर्षों में

चीन के साथ भी हमारे बहुत मधुर संबंध हुए हैं। चीन और पाकिस्तान का आज जो गठजोड़ हो रहा है, इस क्षेत्र के अंदर आज पाकिस्तान जो कुछ कर रहा है, वह अकेले करने की स्थिति में नहीं है। पाकिस्तान के अंदर इतनी हिम्मत या इतना बूता नहीं है कि वह अकेले भारत के खिलाफ इस तरह की घटनाओं को अंजाम दे सके। कहीं न कहीं पाकिस्तान को चीन का मूक समर्थन प्राप्त है और कहीं न कहीं पाकिस्तान के सिर पर अमेरिका का हाथ है। तो हम लोगों को इस बात पर भी गौर करना पड़ेगा कि क्या ऐसा विधेयक पास करने से, ऐसा कानून बनाने से हम अपने मकसद में सफल हो रहे हैं या नहीं हो रहे? मुझे नहीं मालूम कि किसी राष्ट्र को आतंकवादी देश घोषित करने के बारे में कितने देशों ने कानून बना रखा है। मैंने जो जानकारी हासिल की, उसके मुताबिक अमेरिका में तो ऐसा कानून है, जिससे वे दूसरे देशों को आतंकवादी राष्ट्र घोषित करते हैं। उनके अनुभव से भी हमें कुछ सीखने की जरूरत है। आज तक उन्होंने कितने देशों को आतंकवादी राष्ट्र या आतंकवाद प्रायोजक राष्ट्र घोषित किया है। वर्तमान में तो तीन देश उनकी सूची में हैं, लेकिन उससे पहले उन्होंने क्यूबा को आतंकवादी राष्ट्र घोषित किया था, इराक को घोषित किया था, लीबिया, नॉर्थ कोरिया और साउथ यमन को भी घोषित किया था। जब उन्होंने क्यूबा को आतंकवादी राष्ट्र घोषित किया, तब उसके बावजूद दुनिया के अनेक देश, बल्कि मैं कहूंगा कि विश्व का विशाल जनमत क्यूबा के साथ खड़ा हुआ था। क्यूबा को isolate करने के बजाय क्यूबा के सवाल पर विश्व जनमत की नज़र में अमेरिका खुद isolate हुआ था। अमेरिका को क्यूबा की आर्थिक नाकेबंदी करके कोई लाभ हासिल नहीं हुआ, उस समय क्यूबा का भले ही थोड़ा-बहुत नुकसान हो गया हो। मैं तो यहां तक जानता हूँ कि आतंकवादी राष्ट्र घोषित करने के

बाद क्यूबा के खिलाफ जब उन्होंने आर्थिक नाकेबंदी लगायी ... (समय की घंटी)... तो दुनिया के बहुत से देशों ने उसको समर्थन दिया और उसके यहां आर्थिक नाकेबंदी के जो दुष्प्रभाव पड़ रहे थे, उसके खिलाफ भी वे खड़े हुए। हमारे भारत से ही बहुत सारे राजनैतिक दलों ने, गैर-सरकारी संगठनों ने और राज्य सरकारों ने भी जहाज़ के जहाज़ रसद के रूप में वहां पर भेजे थे।.. (समय की घंटी).. सर, मैं एक मिनट और लूंगा। तो हमें यह देखना जरूरी है कि अगर हम किसी देश को आतंकवादी राष्ट्र घोषित करते हैं, तो उससे हमारा कोई उद्देश्य सफल हो रहा है या नहीं हो रहा?

(2जे-जीएस पर जारी)

GS-KGG/2J/3.05

श्री जावेद अली खान (क्रमागत) : दूसरी बात, मैं यह कहना चाहता हूँ कि आज अकेला पाकिस्तान नहीं है, जो आतंकवादी गतिविधियों को अपनी जमीन से संचालित करने की इजाज़त देता है। इस दुनिया के अंदर एक देश है, जिसका नाम इज़राइल है। इज़राइल आज दुनिया में, खास तौर से पश्चिम एशिया में, मध्य एशिया में आतंकवाद का पूरे का पूरा ... (समय की घंटी).... जितने भी देशों की सीमाएं इज़राइल से मिलती हैं....

جناب جاوید علی خان (اترپردیش): مانئیه اُپ سبھاپتی جی، یہ بل پاکستان کو آتک واد پر ایوجک دیش گھوٹیت کرنے کے اڈیش سے جو ہمارے مانئیه سدسئیه راجیو جی نے پیش کیا ہے، میں اس بل پر اپنی پارٹی کی طرف سے رائے رکھنے کے لیئے کھڑا ہوا ہوں۔ یہ بات ستیہ ہے کہ پاکستان کے ساتھ بھارت کے جو سمبندھ ورتمان میں ہیں یا اتیبیت میں رہے ہیں، ان میں پاکستان کی طرف سے لگاتار ایسی حرکتیں ہوتی ہیں، جن سے وہ

سمبندھ پر بھاوت ہوتے ہیں اور ہماری جو اچھا پڑوسی دیشوں کے ساتھ اچھے سمبندھ بنانے کی ہے، اس میں اور ودھا آتا ہے۔ جہاں تک آتک واد کا سوال ہے، اس میں بھی کوئی دو رائے نہیں ہے کہ بھارت کے اندر ادھیکانش آتک وادی گئی ودھیاں پاکستان کی زمین سے سنچالت ہوتی ہیں، اس سنگٹھنوں کے ذریعہ سنچالت ہوتی ہیں جو پاکستان میں رہے کر کے اپنی کارروائیوں کو انجام دیتے ہیں، لیکن جب ہم سنسند میں کوئی قانون بناتے ہیں، کوئی ایکٹ پاس کرتے ہیں تو اس کا پرتھم اڈیش یہ ہوتا ہے کہ اس سے ہم کوئی سفلتا حاصل کر پائیں گے، اپنے اڈیش کو حاصل کر پائیں گے یا نہیں۔

یہ بل، جو مانئے سدسئیے نے یہاں پیش کیا ہے، اگر یہ پاس بھی ہو جاتا ہے تو مجھے نہیں لگتا کہ بھارت آتک واد کو روکنے کی دشا میں کوئی کارگر قدم اٹھاپائے گا۔ ہم جانتے ہیں کہ پاکستان کی طرف سے جو گئی ودھیاں ہورہی ہیں، وہ ہمارے دیش کے ورودھ میں ہیں، ہمارے دیش کو وکھنٹ کرنے کے لیئے ہیں اور ہم اگر کوئی قانون بناکر، سخت قانون بناکر اس بات کا اعلان کرتے ہیں، تو نشچت روپ سے ہم اس بات پر اپنی سہمتی ویکت کرتے ہیں کہ انتر راشٹریہ ستر پر، سنیکت راشٹر سنگھ میں یا دنیا کا جنمت بنانے میں ہمارے کوٹ نیتیک پریاس وقل ہوگئے ہیں اور اب ہم ساری امیدیں چھوڑ چکے ہیں، اس لیے ہم پاکستان کو اب آتک وادی راشٹر گھوشٹ کرنا چاہتے ہیں۔ اس سے ہمارا کوئی مقصد پورا نہیں ہو سکتا۔ ہمارا مقصد تب پورا ہوگا، جب وشو کا جنمت پاکستان کو آتک وادی گئی ودھیاں روکنے کے لیے مجبور کرے۔ ہم جانتے ہیں کہ اکیلے ہمارے گھوشٹ کرنے سے، کہ پاکستان ایک آتک وادی راشٹر ہے، مسئلہ حل نہیں ہوتا۔ ہم تو کر دیں گے، لیکن کیا دوسرے دیش، کیا امریکہ ایسا کریگا؟ آج کل جب سے unipolar world ہوا ہے، یہاں سے دوسری شکتی کا سنڈلن جب سے ختم ہوا ہے، تب سے کوئی بھی انتر راشٹریہ فیصلہ لینے کے لیئے یا ایسا فیصلہ لینے کے لیئے، جس کا انتر راشٹریہ پر بھاؤ ہوتا ہے، امریکہ کی طرف سبھی لوگ نظر اٹھا کر دیکھتے ہیں۔ ہم گھوشٹ کر دیں گے، لیکن کیا ہم امریکہ کو مجبور کر پائیں گے کہ وہ پاکستان کے خلاف اس پرکار کی

آرتھک ناکہ بندی یا اسے مجبور کرنے کے پریاس کرے، جیسا ہم کرنا چاہتے ہیں؟ ابھی حال ہی کے ورشوں میں چین کے ساتھ بھی ہمارے بہت مڈھر سمبندھ ہوئے ہیں۔ چین اور پاکستان کا آج جو گٹھ جوڑ ہو رہا ہے، اس شیئر کے اندر آج پاکستان جو کچھ کر رہا ہے، وہ اکیلے کرنے کی استھتی میں نہیں ہے۔ پاکستان کے اندر اتنی ہمت یا اتنا بوطا نہیں ہے کہ وہ اکیلے بھارت کے خلاف اس طرح کی گھٹناؤں کو انجام دے سکے۔ کہیں نہیں کہیں پاکستان کو چین کا موک سمرتھن پراپت ہے اور کہیں نہ کہیں پاکستان کے سر پر امریکہ کا ہاتھ ہے۔ تو ہم لوگوں کو اس بات پر بھی غور کرنا پڑیگا کہ کیا ایسا ودھیک پاس کرنے سے، ایسا قانون بنانے سے ہم اپنے مقصد میں کامیاب ہو رہے ہیں یا نہیں ہو رہے ہیں؟ مجھے نہیں معلون کہ کسی راشٹر کو آتک وادی دیش گھوشٹ کرنے کے بارے میں کتے دیشوں نے قانون بنا رکھا ہے۔ میں نے جو جانکاری حاصل کی، اس کے مطابق امریکہ میں تو ایسا قانون ہے، جس سے وہ دوسرے دیشوں کو آتک وادی راشٹر گھوشٹ کرتے ہیں۔ ان کے تجربہ سے بھی ہمیں کچھ سیکھنے کی ضرورت ہے۔ آج تک انہوں نے کتے دیشوں کو آتک وادی راشٹر یا آتک وادی پراپوجک راشٹر گھوشٹ کیا ہے۔ ورتمان میں تو تین دیش ان کی لسٹ میں ہیں، لیکن اس سے پہلے انہوں نے کیوبا کو آتک وادی راشٹر گھوشٹ کیا تھا، عراق کو گھوشٹ کیا تھا، لیبیا، نارٹھ کوریا اور ساؤتھ یمن کو بھی گھوشٹ کیا تھا۔ جب انہوں نے کیوبا کو آتک وادی راشٹر گھوشٹ کیا، تب اس کے باوجود دنیا کے انیک دیش، بلکہ میں کہوں گا کہ وشو کا وشال جنمت کیوبا کے ساتھ کھڑا ہوا تھا۔ کیوبا کو isolate کرنے کے بجائے کیوبا کے سوال پر وشو جنمت کی نظر میں امریکہ خود isolate ہوا تھا۔ امریکہ کو کیوبا کی آرتھک ناکہ بندی کر کے کوئی لائبہ حاصل نہیں ہوا، اس وقت کیوبا کا بھلے ہی تھوڑا بہت نقصان ہو گیا ہو۔ میں تو یہاں تک جانتا ہوں کہ آتک وادی راشٹر گھوشٹ کرنے کے بعد کیوبا کے خلاف جب انہوں نے آرتھک ناکہ بندی لگائی --- (وقت کی گھنٹی) --- تو دنیا کے بہت سے دیشوں نے اس کو سمرتھن دیا اور اس کے یہاں آرتھک ناکہ بندی کے جو دوش پربھاؤ پڑ رہے تھے، اس کے خلاف بھی وہ

کھڑے ہوئے۔ ہمارے بھارت سے ہی بہت سارے راجنیتک دلوں نے، غیر سرکاری سنگٹھنوں نے اور راجیہ سرکاروں نے بھی جہاز کے جہاز رسد کے روپ میں وہاں پر بھیجے تھے۔۔۔ (وقت کی گھنٹی)۔۔۔ سر، میں ایک منٹ اور لونگا۔ تو ہمیں یہ دیکھنا ضروری ہے کہ اگر ہم کسی دیش کو آتک وادی راشٹری گھوشت کرتے ہیں، تو اس سے ہمارا کوئی اڈیش سفل ہو رہا ہے یا نہیں ہو رہا ہے؟

دوسری بات، میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ آج پاکستان نہیں ہے، جو آتک وادی گتی۔ ودھیوں کو اپنی زمین سے سنجالت کرنے کی اجازت دیتا ہے۔ اس دنیا کے اندر ایک دیش ہے، جس کا نام اسرائیل ہے۔ اسرائیل آج دنیا میں، خاص طور سے پچھم ایشیا میں، مدھیہ ایشیا میں آتکوواد کا پورے کا پورا،۔۔۔ (وقت کی گھنٹی)۔۔۔ جتے بھی دیش دیشوں کی سیمائیں اسرائیل سے ملتی ہے۔

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude.

SHRI JAVED ALI KHAN: Sir, we are the third largest party, इसलिए हमें थोड़ा सा टाइम दीजिए।

جناب جاوید علی خان : اس لئے ہمیں تھوڑا سا ٹائم دیجئے۔

श्री उपसभापति : आप conclude कीजिए। आप conclude कीजिए।

श्री जावेद अली खान : सर, इतनी हमारी उपेक्षा मत किया कीजिए। सर, हम थर्ड नम्बर की पार्टी हैं। इतनी उपेक्षा हमारी मत कीजिए।

جناب جاوید علی خان : سر، اتنی ہماری اپیکشا مت کیجئے، سر، ہم تھرڈ نمبر کی پارٹی ہیں۔ اتنی اپیکشا ہماری مت کیجئے۔

श्री उपसभापति : आपकी पार्टी के लिए पूरे 9 मिनट का समय है। आपकी पार्टी से एक और सदस्य ने बोलना है। आप 7 मिनट बोल चुके हैं, बाकी दो मिनट का समय बचा है। श्री अमर सिंह ने नाम दिया है।

श्री जावेद अली खान: आपने मुझे 5 मिनट से ही रोकना शुरू कर दिया।

جناب جاويد على خان : آپ نے مجھے 5 منٹ سے ہی روکنا شروع کر دی

श्री उपसभापति : आप मेरी बात सुनिए।

श्री जावेद अली खान : सर, मैं कोई विशेष ज्यादा नहीं बोलता हूँ।

جناب جاويد على خان : سر، میں کوئی خاص زیادہ نہیں بولتا ہوں۔

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Why do you argue with me?

श्री जावेद अली खान : मैंने तो देखा है ...

جناب جاويد على خان : میں نے تو دیکھا ہے۔۔۔

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is not fair.

श्री जावेद अली खान : मैं तो कभी-कभी बोलता हूँ।

جناب جاويد على خان : میں تو کبھی کبھی بولتا ہوں۔

MR. DEPUTY CHAIRMAN: This is not fair.

श्री जावेद अली खान : मेरा दो मिनट का समय तो बाकी है।

جناب جاويد على خان : میرا دو منٹ کا وقت تو باقی ہے۔

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, this kind of argument with the Chair is not acceptable.

SHRI JAVED ALI KHAN: I respect the Chair.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please listen. Your party has a total time of nine minutes. There are two speakers. How much time can you get? Five minutes.

SHRI JAVED ALI KHAN: Sir, my party has given only one name.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no; I have got one more. Is Mr. Amar Singh not in your party?

SHRI B.K. HARIPRASAD: No, Sir; he is not in the SP. ...(Interruptions)...

SHRI JAVED ALI KHAN: My party has given only one name.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Not in the SP? ...(Interruptions)... I am sorry.

SHRI JAVED ALI KHAN: Then, you should not say that I argue with the Chair.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, then you may take two more minutes.

श्री जावेद अली खान : मैं यह कहना चाहता हूँ कि इज़राइल भी एक ऐसा देश है, जब हम कोई कानून बना रहे हैं, जब हम कोई पोजिशन ले रहे हैं एक ऐसे सवाल पर जिस पर पूरी दुनिया का ध्यान जाएगा, तो उसमें हमें बहुत संकीर्ण होकर अपना स्टैंड डिक्लेयर नहीं करना चाहिए। जहां तक भारत का सवाल है, उसके लिए यह जरूरी है, लेकिन भारत का ताल्लुक दुनिया के बहुत सारे देशों से रहा है और हमारे दोस्ताना

संबंध हैं। अगर हमारे दोस्त और हमारे मित्र देश किसी दूसरे देश जो आतंकवादी घटनाओं को प्रायोजित कर रहा है, उससे आतंकित हैं या परेशान हैं, तो उसका भी गौर हमको करना चाहिए। इसलिए मैं चाहूंगा कि राजीव चन्द्रशेखर जी का यह बिल अगर पास होता है इस सदन के द्वारा और हमारी पूरी संसद के द्वारा, तो जिस अनुसूची में आपने पाकिस्तान का नाम लिखा है, उस अनुसूची में मेहरबानी करके इज़राइल का नाम भी लिखा जाना चाहिए क्योंकि वह आतंकवाद को जन्म देने वाला देश है।

आखिरी बात, चूंकि आपने समय कम दिया है और जो दिया है, उसमें भी आपको मेरे बोलने से बहुत सुखद स्थिति नहीं लग रही है, इसलिए मैं अपनी बात खत्म करना चाहूंगा कि इस बिल को पास करने से हमारा क्या फायदा होगा, क्या नुकसान होगा? आज इसी संसद के अंदर एक हम दूसरे बिल पर चर्चा कर रहे हैं, उसकी प्रक्रिया जारी है, The Citizenship Amendment Act. यह हमारे दोनों सदनों की ज्वाइंट सेलेक्ट कमेटी के सामने विचाराधीन है। उसमें क्या स्थिति है? हम मानते हैं कि पाकिस्तान के अंदर धार्मिक आधार पर उत्पीड़न होता है, लोगों के साथ ज्यादाती होती है, तो पाकिस्तान के जो लोग वहां धार्मिक उत्पीड़न के शिकार हैं, वे भारत में आएँ और उनको नागरिकता देने में हम शर्तों को सरल करें। जब हम एक देश को आतंकवादी घोषित कर देंगे, जैसा कि इसके उद्देश्य में लिखा हुआ है कि वहां के नागरिक यहां की यात्रा तक नहीं कर पाएँगे, बल्कि हमारे देश के ऊपर से वे उड़ भी नहीं पाएँगे, तो ऐसी स्थिति में हम उन लोगों के साथ भी अन्याय करेंगे। लिहाज़ा मैं यह चाहता हूँ कि उस बात पर भी हमें गौर करना चाहिए, जो हमारे देश के विद्वानों ने, हमारे देश के जो पूर्व नेता रहे हैं, उन्होंने कही थी। हम दुनिया से कैसे संबंध बनाना चाहते हैं और खास तौर से अपने

पड़ोसी देशों के साथ कैसा संबंध बनाना चाहते हैं? डॉक्टर राम मनोहर लोहिया की बहुत मशहूर एक थ्योरी है कि हम भारत-पाकिस्तान का एक महासंघ बनाना चाहते हैं और जब बंगलादेश बन गया, तो इस देश के समाजवादियों ने इस बात को आगे बढ़ाया कि हम भारत-पाकिस्तान-बंगलादेश का महासंघ बनाकर के इस क्षेत्र को स्थायी शांति दे सकते हैं और इस बात को मैं ही नहीं, आज हमारी जो सरकार है, भारतीय जनता पार्टी की सरकार के जो वरिष्ठ नेता हैं, आज वे मार्ग दर्शक मंडल में हैं। मुझे याद है, जब मैं राजनीति में कार्य करता था और शुरुआती दौर में छात्र जीवन में था....(समय की घंटी)...

جناب جاوید علی خان : میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اسرائیل بھی ایک ایسا دیش ہے، جب ہم

کوئی قانون بنا رہے ہیں، جب ہم کوئی پوزیشن لے رہے ہیں ایک ایسے سوال پر جس پر پوری دنیا کا دھیان جائے گا، تو اس میں ہمیں بہت سنکیرن ہوکر اپنا اسٹینڈ ڈکٹر نہیں کرنا چاہئے۔ جہاں تک بھارت کا سوال ہے، اس کے لئے یہ ضروری ہے، لیکن بھارت کا تعلق دنیا کے بہت سارے دیشوں سے رہا ہے اور ہمارے دوستانہ سمبندھ ہیں۔ اگر ہمارے دوست اور ہمارے متر دیش کسی دوسرے دیش جو آنتک وادی گھٹٹاؤں کو پرایوجت کر رہا ہے، اس سے آنتکت ہیں یا پریشان ہیں، تو اس کا بھی غور ہم کو کرنا چاہئے۔ اس لئے میں چاہوں گا کہ راجیو چندر شیکھر جی کا یہ بل اگر پاس ہوتا ہے اس سدن کے ذریعے اور ہماری پوری سنسد کے ذریعے، تو جس انوسوچی میں آپ نے پاکستان کا نام رکھا ہے، اس انوسوچی میں مہربانی کر کے اسرائیل کا نام بھی لکھا جانا چاہئے کیوں وہ آنتک واد کو جنم دینے والا دیش ہے۔

آخری بات، چونکہ آپ نے وقت کم دیا ہے اور جو دیا ہے، اس میں بھی آپ کو میرے بولنے سے بہت سکھد استتھی نہیں لگ رہی ہے، اس لئے میں اپنی بات ختم کرنا

چاہوں گا کہ اس بل کو پاس کرنے سے ہمارا کیا فائدہ ہوگا، کیا نقصان ہوگا؟ آج اسی سنسد کے اندر ایک ہم دوسرے بل پر چرچا کر رہے ہیں، اس کی پرکریا جاری ہے، The Citizenship Amendment Act. یہ ہمارے دونوں سدنوں کی جوائنٹ سلیکٹ کمیٹی کے سامنے وچاردھین ہے، اس میں کیا استتھی ہے؟ ہم مانتے ہیں کہ پاکستان کے اندر دھارمک آدھار پر اتپیڑن ہوتا ہے، لوگوں کے ساتھ زیادتی ہوتی ہے، تو پاکستان کے جو لوگ وہاں دھارمک اتپیڑن کے شکار ہیں، وہ بھارت میں آئیں اور ان کو ناگرکتا دینے میں ہم شرطوں کو آسان کریں۔ جب ہم ایک دیش کو آتک وادی گھوشت کر دیں گے، جیسا کہ اس کے ادیشے میں لکھا ہوا ہے کہ وہاں کے ناگرک یہاں کا سفر تک نہیں کر پائیں گے، بلکہ ہمارے دیش کے اوپر سے وہ اڑ بھی نہیں پائیں گے، تو ایسی استتھی میں ہم اس لوگوں کے ساتھ بھی انیائے کریں گے۔ لہذا میں یہ چاہتا ہوں کہ اس بات پر بھی ہمیں غور کرنا چاہئے، جو ہمارے دیش کے ودوانوں نے، ہمارے دیش کے جو سابق نیتا رہے ہیں، انہوں نے کہی تھی۔ ہم دنیا سے کیسے سمبندھ بنانا چاہتے ہیں اور خاص طور سے اپنے پڑوسی دیشوں کے ساتھ کیسا سمبندھ بنانا چاہتے ہیں؟ ڈاکٹر رام منوہر لوبیا جی کی بہت مشہور ایک تھیوری ہے کہ ہم بھارت پاکستان کا ایک مہا سنگھ بنانا چاہتے ہیں اور جب بنگلہ دیش بن گیا، تو اس دیش کے سماج وادیوں نے اس بات کو آگے بڑھایا کہ ہم بھارت-پاکستان-بنگلہ دیش کا مہا سنگھ بنا کر کے اس چھیتر کی استھائی شانتی دے سکتے ہیں اور اس بات کو میں ہی نہیں، آج ہماری جو سرکار ہے، بھارتیہ جنٹا پارٹی کی سرکار کے جو سینئر نیتا ہیں، آج وہ مارگ-درشک منڈل میں ہیں۔ مجھے یاد ہے، جب میں راجنیتی میں کام کرتا تھا اور شروعاتی دور میں چھاتر جیون میں تھا۔۔۔(وقت کی گھنٹی)۔۔۔

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude.

श्री जावेद अली खान : उस वक्त लालकृष्ण आडवाणी जी ने भी इस बात की पैरोकारी की थी।

جناب جاوید علی خان : اس وقت لال کرشن ایڈوانی جی نے بھی اس بات کی پیروکاری کی تھی۔

(ASC/2K پر جاری)

ASC- KLS /3.10/2K

श्री जावेद अली खान (क्रमागत) : पाकिस्तान और बंगलादेश का महासंघ बनाना चाहिए। यह एक धारणा रही है(व्यवधान)... जनमत की कि भारत और पाकिस्तान के संबंध ... (व्यवधान)... अच्छे होने चाहिए और ..(व्यवधान)...

جناب جاوید علی خان : پاکستان اور بنگلہ دیش کا مہاسنگھ بنانا چاہیئے۔ یہ ایک دھارنا رہی ہے۔۔۔ (مداخلت)۔۔۔ اچھے ہونے چاہیئے اور۔۔۔ (مداخلت)۔۔۔

श्री उपसभापति : कृपया समाप्त कीजिए।

श्री जावेद अली खान : हमारा एक ऐसा गठजोड़ बनना चाहिए, जो एशिया ही नहीं बल्कि दुनिया में अपनी तरफ से शांति का प्रस्ताव दे सके। ..(व्यवधान)...

جناب جاوید علی خان : ہمارا ایک ایسا گٹھ جوڑ بننا چاہیئے، جو ایشیا ہی نہیں بلکہ دنیا میں اپنی طرف سے شانتی کا پرستاؤ دے سکے۔۔۔ (مداخلت)۔۔۔

श्री उपसभापति : आप बैठिए, बैठिए। Okay, please conclude. आप बैठिए, बैठिए। श्री वि. विजयसाई रेड्डी ।

श्री जावेद अली खान : राजीव जी, मैं यह कहना चाहूंगा कि जहां तक आपके बिल का सवाल है, इस बिल की भावना बहुत अच्छी है कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई होनी चाहिए, लेकिन इस तरीके के बिल का मुझे कोई लाभ नहीं लग रहा है, जब तक सरकार की इच्छाशक्ति न हो।

جناب جاوید علی خان (جاری): راجیو جی، میں یہ کہنا چاہوں گا کہ جہاں تک آپ کے بل کا سوال ہے، اس بل کی بھاؤنا بہت اچھی ہے کہ آتک واد کے خلاف لڑائی ہونی چاہیے، لیکن اس طریقے کے بل کا مجھے کوئی لائبہ نہیں لگ رہا ہے، جب تک سرکار کی اچھا شکتی نہ ہو۔

(समाप्त)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Vijayasai Reddy. Practically, how much time? Two-three minutes you take.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY: Please give me seven minutes' time. I will not ask for more than that.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no, you can take three minutes.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY: Five minutes, at least. I will quickly conclude, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: All right, you take five minutes.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY: (ANDHRA PRADESH): Sir, the Bill, as introduced by Rajeev Chandrasekharji and as I have understood, is applicable to those countries which sponsor terrorism and should be declared as terrorist countries. This is the sum and substance of the Bill. I am only suggesting the Government and also trying to find out whether this Bill is *ultra vires* the Constitution of India. If it is going to violate the UN Charter or UN Conventions, probably, it will be *ultra vires* the Constitution. Therefore, I request the Government of India to look into that aspect. However, I may be permitted to highlight both positive and negative aspects of the Bill so that the Government of India will take care of these issues. In fact, YSR Congress Party, on behalf of our Party President, Jaganmohan Reddy Garu, supports this Bill. However, I would like to pinpoint certain issues which may go against the Government of India in case if this Bill is enacted and those issues can be taken care of. So, kindly give me five minutes from now onwards. It is like introduction.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: After minutes are over, you will say like this.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY: Sir, since 1994, till now it is now 22 years, so far in these 22 years approximately about 25,000 civilians and about 10,000 security personnel have been killed because of the Pak-sponsored terrorism in India. It is a fact. Further, approximately 78,000 square kilometers of our

own Indian land is in the illegal occupation of Pakistan as Pak Occupied Kashmir. Further, Sir, in Pakistan, leave about India, the religious minorities such as Hindus, Christians, Shias, Ahmedias, Islamias and various other religious communities even today are being targeted, being persecuted and subjected to so much targeted attacks. Therefore, it is an undeniable fact that Pakistan is a sponsor of terrorism and, therefore, it has to be taught a lesson. But how? It has to be in a legal framework and it should stand for judicial scrutiny. That is what my point is. In fact, the fact that it is a terrorist sponsored State can be substantiated with reference to some more facts also. In 19th Asian Security Conference which has been held at the Institute of Defence Studies, former National Security Advisor of Pakistan, General Mahmood Ali Durani, himself has admitted that 26/11 terror attacks in India in Mumbai had been orchestrated by Pakistan. That attack is a reminder to us. We can remember that 166 people had been killed, including some of the foreigners. The Pakistan Government has itself accepted that it is sponsoring terrorism in India. What more evidence is required? That itself is evidence.

(Contd by 2L/SSS)

SSS-LT/2L/3.15

SHRI V. VIJAYASAI REDDY (CONTD.): Sir, one more point is, Pakistan has got a dual policy insofar as terrorism is concerned. According to Pakistan's dictionary, there are two definitions. One is bad terrorists and another is good terrorists. Who are bad terrorists? Bad terrorists, according to Pakistan, are the terrorists who attack Pakistan military installations, Pakistan civilians and Pakistan Police. Good terrorists, according to Pakistan's dictionary, are the terrorists who attack Indian Police, Indian military and Indian establishment. This is the dual policy which is being adopted by the Pakistan Government so far as terrorism is concerned. Sir, I would like to bring to the notice of this august House one important issue, when it comes to violation of rules that have been framed under Vienna Convention. I draw your kind attention to Article 62 of the Vienna Convention which states "a fundamental change of circumstances". Why? How can Pakistan be declared as a terrorist State? I am only referring to Article 62. According to Article 62, it is "a fundamental change of circumstances". That is very important. Wherever there is a fundamental change of circumstances which occurred with regard to those existing at the time of conclusion of a treaty, it may be invoked as a ground for terminating or withdrawing from the treaty. Therefore, what I am trying to say, Sir, is, even though there is a Vienna Convention and we are also party to that, still

it is very much justified and it is within our fundamental right that because there is a change in the 'fundamental change of circumstances', as per the article of Vienna Convention, it is very much justified that we can withdraw economic and trade relations with Pakistan. Therefore, ..

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY: Sir, just a few more minutes. It is a very important issue. I would really like to put forth to your goodself. Sir, let us see the international perception of Pakistan insofar as terrorist State is concerned. Sir, in September 2016, in the U.S. House of Representatives a Congressman named Ted Poe introduced a Bill 'Pakistan State Sponsor of Terrorism Designation Act (HR 6069). It means that the U.S. also has confirmed it. In fact, he is the Chairman of the Committee on Terrorism. The U.S. itself has recognized that Pakistan is sponsoring terrorism. This is an indication. Secondly, in December, 2016, the President of Afghanistan has accused Pakistan of waging an "undeclared war" against Afghanistan and he further confirmed that Taliban insurgents battling against his Government may not last long without sanctuary of Pakistan Government. Therefore, it is not only against India, but also against Afghanistan and other countries also, Pakistan is waging an undeclared war and also encouraging terrorism. Finally, Sir, one more point. (Time-bell) Sir, you please give me

one more minute. Sir, whether the lenient attitude of India towards Pakistan is really yielding any result or not. According to me, it is not yielding any positive result. In fact, hon. late Prime Minister, Pandit Jawaharlal Nehruji, in the case of Indus Water Treaty, had clearly stated that he is giving 80 per cent of water to Pakistan so far as tributaries to Indus river, Jhelum and Chenab, are concerned. Eighty per cent of water is given to Pakistan. That is the goodwill gesture. Is Pakistan really responding and reciprocating positively to the goodwill gesture that India is sending? In fact, I say, 'no'. I can say even our own Prime Minister...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: All right. (Time-bell) You took eight minutes.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY: Sir, just one more minute. Let me conclude.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no; please conclude. You took eight minutes. In place of two minutes, you took eight minutes.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY: Sir, I will conclude. Sir, I will finally conclude. Sir, Pakistan, post-independence, almost for 30 years, is under military rule. Even if the civilian Government wants to cooperate with the Indian Government, still the military of Pakistan will not allow the civilian Government of Pakistan to cooperate with India. Thirdly, Sir, according to me, in the light of the circumstances, India should enhance people-to-people contact and use its soft power.

-SSS/NBR-KLG/2M/3.20.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY (CONTD.): And, further,...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Alright. You have taken nine minutes in place of two minutes.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY: ...even today 68 per cent of the people of Pakistan want good relationship with India.

In the light of this fact, I support the Bill and want that Pakistan has to be taught a lesson.

Thank you.

(Ends)

DR. ABHISHEK MANU SINGHVI (RAJASTHAN): Sir, let me first start by commending the propounder of this Bill, Mr. Rajeev Chandrasekhar, our colleague, and I think his zeal, good intentions, researches is not in doubt. His *bona fide* is not in doubt.

Although I am going to show how the Bill does not really achieve any objective and suggest some changes, I think, the fact that he has generated a great awareness on this subject in a very short time is highly commendable.

Sir, the issue is not whether Pakistan terrorizes India. The issue is not how many people and how many lives we have lost. The issue is not that the international perception clearly is that Pakistan is a huge exporter of terrorism. The issue is not that Pakistan plays multiple hypocrisies and has many, many standards in dealing with terrorism. I think, all that is a given one. There would not, perhaps, be a single Member of this House or the other august House to oppose it. So, I think, as far as the sentiment is concerned, the whole of this House fully support the fact that Pakistan deserves to be treated as a terror exporting State, particularly with respect to India. The real question, however, is none of these. The real question is: Does this Bill add any value? And, with the best of intentions, I would say that value may not be added. Why does it not add value? We have already declared and we have had Parliamentary resolutions and declarations and, perhaps, we should have another one saying exactly what Mr. Rajeev Chandrasekhar's Bill propounds. We can have a Parliamentary resolution in two minutes saying, 'Pakistan is a terrorist exporting nation and is a terrorizer of India.' But, there is a difference between a resolution or declaration and an Act or a Bill of Parliament. A Bill must have some teeth. It must give some actionable points by which the Government is bound. It must be the law of the land. Now, the heart of this Bill is clause 3. It gives

some 7-8 penal provisions. It permits travel and Visa restrictions. It permits trade restrictions. It permits receiving and grant of remittances, manufacturing, maritime fishing, trading, over-flight restrictions, credit transfers and so on and so forth. There is a very comprehensive list. The question is, each one of them, as I had just mentioned, can be done by a simple notification by the Government of India requiring no Parliamentary enactment. To put restrictions on trading or on fiscal front, there are statutes which permit notification. Even today, as we sit here, we can ban any travel or restrict any Visa. Therefore, clearly, with the best of intentions, Mr. Rajeev Chandrasekhar, needs to go back to the drawing board and use his very, very impressive intellect and vast resources to come up with a better model. Now, let me suggest a better model. I am saying it only constructively. I am sure he will be able to do it much better.

If you accept that a Bill or an Act of Parliament must have teeth, then how do you punish? The whole idea of Mr. Rajeev Chandrasekhar is, to some sense, to punish Pakistan when it does all that. Well, I suggest, merely saying, 'the Government of India may do it' is not enough. You need to create a calibrated hierarchy of both events and punishments. Let me explain what I mean it very, very briefly. I will be finishing it in a couple of minutes. If Pakistan is found in any particular event -- Uri or anywhere else

-- in India to have a hand, on the basis of the Government of India's inquiry, within a short period, that is offence number one. In the event that Pakistan is found after another three months to have done a second event, then that is offence number two and so on and so forth. So, a future, better and improved Bill of Mr. Chandrasekhar should say that the moment the Government of India comes to a finding that there have been three events of this kind or two events of this kind, which are based on the Government of India's reports and inquiries, then the first of a calibrated list of consequences 'must' follow, not 'may' follow.

(CONTD. BY USY/2N)

USY/2N/3.25

DR. ABHISHEK MANU SINGHVI (CONTD.): It is not an Act of Parliament that the Government has an option. The Government already has options in all these Acts to have notification issued. It must follow. Now, what is that calibrated list of penalties? And, I am not saying that this is the right way; I am saying that these are only suggestions. The first could be, the official Government warning. Under this Act of Parliament, having found offence one, two and three, the first is a warning; then, having found the fourth offence, the next is that we must exercise the right of curtailing travel or curtailing visas for a particular segment, which hurts Pakistan, but at a lower

level; if it continues as a habitual offender, then, the third can, for example, purely by way of example, a fishing restriction; fourth can be a trade restriction in a particular commodity which hurts Pakistan more than the first three. It is this kind of a calibrated specific list of penal consequences, in turn, based on multi findings of repeat offences recorded by the Government of India, which alone will make this from a mere declaration of intent into an Act of Parliament, if ever it becomes an Act of Parliament. Obviously, that is what the intention is. And, I think, it will have the entire might of the sovereign State of India; it will have the entire might of the Parliament. And, since it is based on Government findings and inquiries, which show Pakistan with a hand here killing ten people, with a hand there killing twenty people, with a hand there hurting so many people, the Government, in that case, is bound by its own conclusions. Therefore, the necessary consequences in a calibrated manner must follow. I am sure, you can leave a little bit of play in the joints; I am sure, you can leave a little bit of flexibility. But that is the kind of model on which we must all collectively work together. And, indeed, it will be a unique model. It will be a model, as far as I know, not available in most of the countries. The US is a wrong example because they have so much of financial assistance, so much of trading of different kinds. If it simply declares someone a terrorist State

that stops their funding. India does not necessarily have that financial assistance power. So, our Act must be differently styled and, I think, it will be the first of its kind. And, I am sure, that in the near future Mr. Rajeev Chandrasekhar will be author of a better and a more efficacious Bill. Thank you.

(Ends)

DR. SUBRAMANIAN SWAMY (NOMINATED): Mr. Deputy Chairman, Sir, first of all I think the sentiments of the House seem to be to compliment Mr. Chandrasekhar for thinking of this, articulating this, and producing a Bill. The best way to understand the Bill is to read the Objects and Reasons, which are on page 6 of the Bill. Of course, the object is to declare Pakistan as a terror-promoting or sponsoring State. How disappointed we are with what Pakistan is doing. My predecessor speaker spoke about calibrating. I wonder whether we have long past that time. When partition was created, the hope was that the elements, which constituted Pakistan leadership, would work for peace with India as they had got a separate country. But that did not happen. In fact, if you read the debates of the British Parliament on the Indian Independence Act, which created Pakistan, the speakers after speakers said in that debate, and this was endorsed by the then British Government, that the aim is to create a Muslim-governed Pakistan and a

Hindu-governed India, which led Ambedkar to say, "Let's have a population exchange." But some Indian leaders, particularly Mahatma Gandhi, felt that that would be wrong and that we should continue with the experiment of trying to live in peace with all communities. But, over a period of time, we have found that it has become increasingly difficult.

(Contd. by 2o – PK)

PK-SCH/20/3.30

DR. SUBRAMANIAN SWAMY (CONTD.): In 1971, we were compelled to break Pakistan into two because of the fact that a heavy burden was imposed on us on account of an internal conflict. So, the question now will become: How do we deal with this question of Pakistan now? We have tried all this calibration during the 10 years of the UPA; all we have got is more terrorist attacks. Some relief has come after the surgical strike by our Government, but that is not enough. We need a much more macro-surgical strike, and, for that, we have to prepare ourselves. In fact, yesterday, Mr. Chandrasekhar, just informed me and showed me a publication. One of the Senates has introduced a Bill to declare Pakistan as a terror-sponsor State. So, it is not only we who think it is. The biggest patron of Pakistan today thinks so. There are people who are lawmakers there who think that it is so. And, now with Mr. Trump becoming President, it is just possible that

they all will go in that direction. We are the ones who are the affected people. How many incidents have taken place? So, what is the answer? Each time, you can't say, peace, peace, peace. There has to be, at some stage, a retaliation. And, the first retaliation, in my opinion, would be -- if the Government is ready to do it -- of an executive action, as Mr. Tulsi has suggested, or, by seeing the sentiments in this House, accept this Bill, or, say that we will come forth with our own Bill in this matter, or, a statement in the House. I would like to say that one of the greatest tributes to India's composite culture is that the founder of Pakistan, Mohd. Ali Jinnah, had only one daughter, and she chose to live in India. She made a public statement disowning Pakistan, and her only son today is one of our prominent industrialists. So, this itself is something that we have not publicised. But it is something that bothers Pakistan, which keeps referring to it time and again. This shows that, ultimately, the civilian society in Pakistan may be for India, but the fact is that the civilian society does not run Pakistan. There may be an election and there may be an elected Government, but, ultimately, it is the military, the ISI and the terrorists. Today, with ISIS coming into, on its own, as an identity, there is a vast influx of ISIS people into Pakistan, and that is spilling over to India today. We saw that in Lucknow, we saw that in Bhopal, we are seeing this in Kerala, we are seeing

it in Ramanathapuram in Tamil Nadu. The ISIS is very clear that India has to be converted into a caliphate. Whether they succeed in it or not, but they are going to try. Therefore, you have to prepare for it. We may, again, be forced to intervene in Pakistan's structure, like we did at the time of Bangladesh. There are States within Pakistan which do not want to remain any more with Pakistan. Like Balochistan, there are movements in Sindh. One of these days, it might become necessary for us to enforce --- like we did it in the case of Bangladesh -- Pakistan into four separate countries to reduce the hotbed, the basis for Pakistan terrorism, namely, what is now called as Punjab in Pakistan. So, now, it is no more a question of debating and looking for conciliatory approaches. We have tried everything. Today, we have nothing but to take action, but what kind of action? The first signal is, if the United States is doing this, we can coordinate with the United States. Of course, the Israelis are very good friends, despite some ideological problems of the people on that side. But the fact is that they have been supportive of us. They have been helping us in our fight against terrorism. So, the United States, Israel and India become natural partners in dealing with terrorism. Therefore, I would very strongly recommend our Government that on the basis of the facts assembled by Mr. Chandrasekhar, let us move forward, declare Pakistan as a terror-

sponsoring State, and remove the Most Favoured Nation status that we have given them for trading. Today, Pakistan's cement comes here at a price lower than that of our own cement manufacturers. They are dumping cement here. There are so many trades where they are benefitting. This money, then, ultimately, gets funnelled into the military, and, from there into terrorism.

(Contd. by SK/2P)

SK-VNK/2P/3.35

DR. SUBRAMANIAN SWAMY (CONTD.): So, it is about time for us to stop talking in terms of all this goody-goody stuff, having their cinema stars come here, playing cricket. These are all over. They are not going to produce results. They just make a mockery; they make fun of us on this issue. What we need to do is, take a hard look at Pakistan and see whether this state deserves to exist in this present form. For that, the first step will be declaring it as a terror-sponsoring state. Thank you very much.

(Ends)

श्री महेश पोदार (झारखंड) : उपसभापति जी, आज इस सदन में माननीय गृह मंत्री जी ने लखनऊ की घटना के सम्बन्ध में दो बातें कहीं। एक तो उन्होंने आतंकवाद के बारे में बात कही और दूसरा, आतंकवादी के परिवार, उसके पिताजी की बात कही कि उन्होंने कैसे अपने पुत्र को disown किया। महोदय, भारत में आज जो एक नई सोच हो रही है,

वह पाकिस्तान के प्रति, आतंकवाद के प्रति एक नई भावना जाग्रत कर रही है। माननीय राजीव जी का यह प्रस्ताव भी इसी नई सोच की एक उपज है।

महोदय, आजादी के पहले हम एक थे। "बाँटो और राज करो" के तहत हम बँट गए। धर्म के नाम पर देश को बाँटने का आधार बनाया गया, लेकिन उस बँटवारे के बाद आज भी भारत में लाखों लोग ऐसे हैं, जिनके जख्म भर नहीं पा रहे हैं। कहते हैं कि time heals. समय के साथ-साथ यह जख्म भर जाना चाहिए था, लेकिन यह भरता नहीं। जब इसके भरने की प्रक्रिया शुरू होती है, तो उसे बीच-बीच में कुरेद दिया जाता है। इस तरह से घाव भरने नहीं दिया जा रहा है। सामान्य तौर पर कई पीढ़ियाँ गुजर गईं और अब तक हमारे सम्बन्ध सुधर जाने चाहिए थे, हमारे घाव भर जाने चाहिए थे, लेकिन यह भर नहीं रहा। हमारा कसूर क्या है, यह भी आज तक कोई स्पष्ट नहीं बता पा रहा है। उन्होंने धर्म के आधार पर पाकिस्तान तो बनाया, हम राजी भी हुए, लेकिन वे अपने देश को एक न रख पाए। इसमें हमारा क्या कसूर है? हमारे हजारों जवान इस प्रक्रिया में शहीद हो गए, हमारे सामान्य नागरिक भी आतंकवाद की भेंट चढ़ रहे हैं, अरबों रुपए भी खर्च हो रहे हैं, लेकिन आखिर कब तक हम अपने गरीबों की रोटी छीन कर इनके ऊपर खर्च करते रहेंगे? हमने इस बीच क्या-क्या पहल नहीं की! हमने सब कुछ किया। जीती हुई जंग में कैदी सिपाहियों को मेहमान की तरह रखा, उन्हें वापस किया, सम्मान के साथ।

(2क्यू/डीएस पर जारी)

-VNK/DS-YSR/3.40/2Q

श्री महेश पोदार (क्रमागत) : हमारे नेतृत्व ने सार्वजनिक रूप से यह भी कहा कि दोस्त बदले जा सकते हैं, लेकिन पड़ोसी नहीं। हमारे हर शासन ने दोस्ती का हाथ बढ़ाया और उन्होंने देश के अंदर विभिन्न मतों को, जो मत पाकिस्तान के खिलाफ थे, उनको नजरअंदाज भी किया, आलोचना भी झेली, लेकिन ढाक के वही तीन पात! महोदय, बहुत हो गया। हमारे गृह मंत्री जी को अब अपने सिपाहियों को यह कहना पड़ रहा है कि पहल मत करो, लेकिन सीमा पार से गोली आए, तो जवाब में कितनी गोली दागोगे, उसकी गिनती की कोई जरूरत नहीं है, आज परिस्थिति ऐसी हो गई है।

महोदय, यह बिल भारत के आम आदमी की भावना को दर्शाता है। वह अपना पड़ोसी भाव निभाते-निभाते थक गया है। हमने कई युद्ध झेले, संसद पर हमला झेला, 26/11 के मुम्बई का हमला झेला, हमने कई तरह के आतंकवाद को झेला और अब भी झेल रहे हैं। अब घर के अंदर भी आतंकवाद अपने पैर फैला रहा है, फिर भी यह प्रस्ताव कि युद्ध की बात नहीं कर हम उनसे अपनी दूरी बढ़ाने की बात कर रहे हैं, यह हम सिर्फ बिगड़े रिश्तों को बिगड़ा मानने की औपचारिकता कर रहे हैं। अतः सदन में इस पर गहन चर्चा होनी चाहिए। आज समय आ गया है, we call a spade a spade. जो हमारे खिलाफ है, हम भी उसके खिलाफ हैं, यह संदेश इस बिल के माध्यम से साफ हो जाएगा, शक की कोई गुंजाइश नहीं होगी।

महोदय, हम गुज़ारा कर लेंगे। जैसा हमारे माननीय साथी ने कहा है, हम पाकिस्तान से सीमेन्ट नहीं मँगाकर भी गुज़ारा कर लेंगे, हम आवाजाही पर भी नियंत्रण कर लेंगे, हम सब कुछ कर लेंगे, हमने सब कुछ देख लिया, लेकिन उसके बाद भी यदि हम इस तरह की ढीली व्यवस्था रखेंगे, तो यह उचित नहीं होगा।

उपसभापति जी, राजीव जी के इस प्रस्ताव से लोग असहमत हो सकते हैं, पर इसे हम गलत नहीं कह सकते। यह एक स्वाभिमानी देशभक्त की प्रतिक्रिया है और आशा है कि सदन इसका सम्मान करेगा, पर संभवतः इस बिल के सारे प्रावधानों को सरकार संज्ञान में लेगी और उन पर उपयुक्त कार्रवाई करेगी, जिसके लिए शायद अभी क़ानून बनाने का वक्त नहीं आया है, लेकिन हाँ, कुछ न कुछ निर्णय लेने की आवश्यकता है और कुछ न कुछ करते रहने की आवश्यकता है, धन्यवाद।

(समाप्त)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Swapan Dasgupta. The United Group has no time. But you can take three minutes.

SHRI SWAPAN DASGUPTA (NOMINATED): Sir, whatever time you give me, I am glad because I gave the notice at a very late stage.

I want to join other Members here who complimented Shri Rajeev Chandrasekhar for his erudition, for his scholarly application and for producing a wonderful document. However, I will desist from adding the word 'but' to his wonderful Bill. Because, unlike a lot of others, I don't necessarily see the nuanced and calibrated approach, which we often find Foreign Office Communique mentioning 'necessarily a very good thing'. I often wonder whether it is time we should say certain things quite openly and explicitly. It is not necessary for us to go through the rigours or trying to show who is a bad boy. First bad mark, second bad mark and after the

third bad mark, he is expelled. It is not necessary. I think by now everybody knows what Pakistan is. Unfortunately, for us, we seem to be under a degree of squeamishness about how we can approach this problem. It is being contended that a Bill of this nature while wonderful in sentiment does nothing specific. I think it does. I tell you, Sir, in my view, which may be a little different from that of Rajeev Chandrasekhar, who has proposed the Bill. The first important point is that I think it creates a safeguard against what I would call 'the Wagah spirit'. There are people who believe that every bomb blast, every act of terrorism and every attack on our Army camp should be responded by going with a candle to Wagah saying *Aman ki Asha* and let us have more *Samjhauta*, etc. It sets an institutional deterrent to the type of activities we saw in Sharm-el-Sheikh where we equated their terrorism with our terrorism. A moral equivalence was established. A Bill of this nature puts a natural safeguard to say that terrorism directed against India will not be tolerated. If today it is Pakistan, tomorrow it could be some other country. But I think once that mechanism is in place, then we know the limits where the Foreign Policy Establishment can go and cannot go. It is very, very important in that respect.

Secondly, Sir, it is being contended that what really is our power. The United States is a big country, etc. They can do this and they can have Bills

and legislations against terrorism. We are just insignificant. The moment we start thinking of ourselves as merely, to use Krishna Menon's phrase, the quality in world affairs rather than a power in world affairs, we fall into this trap. It is about time India as a rising economic power must have a foreign policy which is commensurate with that. We cannot have a foreign policy which is really one of arm-wringing while economically we are better off. There must be a level of parity.

(Contd. by VKK/2R)

-YSR/VKK-MCM/2R/3.45

SHRI SWAPAN DASGUPTA (CONTD.): And, Sir, in that level of parity, one of the things is the protection of India's natural sovereignty. For Pakistan, it is not merely a question of territorial disputes. We can have territorial disputes with a lot of people. That is part of the game. In Pakistan, they have gone one step further. I think it is the subversion – whether it is in the form of fake currency notes, which was one of the major reasons for demonetisation programme, or whether it is subversion in other ways. We cannot always respond to it by saying that we are really estranged brothers. Yes, we were estranged brothers at one time. But, after 70 years, when someone thinks of you as an enemy and someone thinks of you as separate, to use that thing that we were once linked by the same bloodline is no longer

a valid proposition. So, Sir, it is to first create the environment whereby foreign policy is not based on individual flights of whimsy (Time-bell) and is more based on certain institutional checks. That is the reason I would like to support this Bill. Thank you very much.

(Ends)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Amar Singh, do you want to speak? Okay. Please take three minutes.

श्री अमर सिंह (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभापति महोदय, सबसे पहले मैं श्री राजीव चन्द्रशेखर जी को बधाई देना चाहूंगा कि उन्होंने इस बिल को प्रस्तावित किया है। आपको भी धन्यवाद कि बहुत अल्प समय में नोटिस देने के बावजूद आपने बोलने का अवसर दिया है। यह ठीक है कि विश्व छोटा हो गया है और विश्व में हर स्थान से हम जुड़ गए हैं। लेकिन प्रासंगिकता जिस बात की है कि हमें क्या चीज तंग करती है, अभी-अभी वक्ताओं ने, किसी ने वियेना का जिक्र किया, किसी ने इज़राइल का किया और किसी ने क्यूबा का किया, लेकिन इज़राइल में क्या हो रहा है, क्यूबा में क्या हो रहा है, वियेना में क्या हुआ, उससे ज्यादा यह भी सच है कि हम अपना मित्र बदल सकते हैं, लेकिन अपना पड़ोसी नहीं बदल सकते, लेकिन यह भी उतना ही बड़ा कड़वा सच है कि इतने दिनों बाद अगर पड़ोसी नहीं सुधर सकता, तो हमको सिवाए इस बात के कि "कर्म करोगे कर्म करेंगे, सितम करोगे सितम करेंगे, जो तुम करोगे वह हम करेंगे" इसके अलावा और कोई चारा हमारे पास नहीं है। हमारे बहुत बड़े विधिवेत्ता और बड़े

पुराने मित्र अभिषेक मनु सिंघवी ने कुछ विधिक व्यावहारिक दिक्कतें इस बारे में बताई हैं। हालांकि उन्होंने भी इस बिल के पीछे छिपी भावना और राष्ट्रवाद की सराहना की है। मुझे नहीं पता, मैं उनकी तरह बड़ा विधिवेत्ता नहीं हूँ कि यह संवैधानिक रूप से इस बिल को किसी तरह से नियोजित या प्रायोजित कोई विधिक प्रारूप दिया जाए। लेकिन अगर यह संभव है तो निश्चित रूप से आम भारतीयों की यह राय होगी, जैसा कि हमारे मित्र डा० सुब्रमण्यम स्वामी ने कहा है कि इसको तत्काल प्रभाव से लागू किया जाए, क्योंकि अब मामला सिर्फ कश्मीर का नहीं है, मामला सिर्फ संसद पर हमले का नहीं है। अब हमारे गृह जनपद की राजधानी में भी आतंकवाद के बम के मसाले फट रहे हैं। हमारे देश का कोई भी स्थान सुरक्षित नहीं रह पाएगा, अगर हम लोग इस पर कोई कड़ा प्रावधान नहीं लाएंगे, क्योंकि आतंकवाद का कोई चेहरा नहीं है। यह सुषुप्त अवस्था में है। पता नहीं सामने कौन सा व्यक्ति जो सफेदपोश दिखाई दे रहा है, उसके अंदर कौन सा आतंक पल रहा है, बढ़ रहा है और जब तक हम इस पर कोई अंकुश नहीं लगाएंगे, कोई कड़ा प्रावधान नहीं करेंगे, क्योंकि जो हमारी नजर में आतंकवाद है, पाकिस्तान की मिलिट्री रिजीम के लिए वह राष्ट्रवाद है। तो इसलिए उनके कथित राष्ट्रवाद से लड़ने के लिए उसे आतंकवादी देश घोषित करें, उनको ईंट का जवाब पत्थर से देना पड़ेगा, यह आम भारत के नागरिक के राष्ट्रवाद की आज भावना है। और यह भावना कुछ इस तरह से है कि -

"दिल की बात कहे दिलवाला, सीधी सी बात, न मिर्च मसाला,
कहता रहेगा कहने वाला और नहीं सुनके दे सुनने वाला,
तो कोई बात नहीं"

इसलिए इस बिल का समर्थन करते हुए एक बार फिर राजीव चन्द्रशेखर जी को बधाई और उनकी सराहना करते हुए और विधिवेत्ता हमारे मित्र अभिषेक मनु सिंघवी की विधिक दिक्कतों को, व्यावहारिक दिक्कतों का समन्वय करके इस बिल को एक रूप दिया जा सके, ऐसी कामना के साथ आपको धन्यवाद देते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ, धन्यवाद।

(2S/SC पर आगे)

-VKK/BHS-SC/2S/3.50

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, hon. Minister to reply.

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री हंसराज गंगाराम अहीर) : माननीय उपसभापति महोदय, यहां पर माननीय सदस्य श्री राजीव चन्द्रशेखर जी ने जो गैर-सरकारी विधेयक प्रस्तुत किया है, इस पर बहुत से माननीय सदस्यों ने अपने विचार रखे हैं। इन सभी सम्माननीय सदस्यों की भावनाओं को हम सभी ने सुना है। माननीय राजीव चन्द्रशेखर जी के बाद श्री आनंद भास्कर रापोलू, श्री के.टी.एस. तुलसी जी, श्री जावेद अली खान जी, श्री वि. विजयसाई रेड्डी जी, डा० अभिषेक मनु सिंघवी जी, डा० सुब्रमण्यम स्वामी, श्री महेश पोदार जी और श्री अमर सिंह जी ने अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त श्री स्वपन दास गुप्ता जी ने भी इस संबंध में अपने विचार रखे। इन सभी के विचार हम सभी ने सुने। मैं सभी के विचारों का सम्मान करता हूँ। जो विधेयक यहां आया है, उस विधेयक के बारे में सभी ने श्री राजीव चन्द्रशेखर जी के विचारों और उनकी भावनाओं का सम्मान किया। मैं आपके इन विचारों का सम्मान करते हुए हमारी सरकार की ओर से यह कहूंगा कि हम सब जानते हैं कि बहुत लम्बे अरसे से सीमा पार

से पाकिस्तान के द्वारा हमारे देश में जो आतंकवाद फैलाया जाता है, उसका हम कई वर्षों से सामना करते आ रहे हैं। केन्द्र तथा राज्य सरकारों के निरंतर प्रयासों के कारण इस चुनौती का सामना करने में हम कई बार सफल हुए हैं। भारत सरकार द्वारा सभी अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद के सभी प्रारूपों और प्रकारों की निंदा की जाती है। देश के भीतर इस चुनौती का सामना करने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न उपाय किए गए हैं तथा लगातार किए जा रहे हैं। सरकार द्वारा द्विपक्षीय और बहुपक्षीय मंचों पर पाकिस्तान द्वारा आतंकवादी संगठनों को समर्थन दिए जाने के विषय को उठाया जाता है। तथापि मैं आपके माध्यम से यह भी बताना चाहूंगा कि किसी देश को आतंकवाद के प्रायोजक देश के रूप में घोषित किए जाने के दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। जहां तक आतंकवाद के प्रायोजक देश के नागरिकों पर प्रतिबंध लगाने का संबंध है, विभिन्न अधिनियमों के अंतर्गत ऐसे प्रावधान विद्यमान हैं, जैसे law enforcement agencies लागू कर सकते हैं, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान आतंकवाद के प्रायोजक देश को वित्तीय सहायता दिए जाने के विभिन्न आयामों से अवगत है तथा FATC ने आतंकवादियों के वित्तपोषण को रोकने के लिए विभिन्न प्रावधान किए हैं। एक देश को पूर्णतः आतंकवाद का प्रायोजक देश घोषित करने के राजनयिक सहित दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। किसी देश का किसी भी तरह का निर्णय लिए जाने के पूर्व इसका अध्ययन किए जाने, उन्हें समझने और उसके लिए तैयारी किए जाने की आवश्यकता है। अंततः विधेयक का समर्थन नहीं किया जा सकता। मैं आपके माध्यम से सम्माननीय श्री राजीव चन्द्रशेखर जी से विनती करता हूं कि वे इस विधेयक को कृपया वापस ले लें, ऐसा मेरा आपके

माध्यम से उन्हें अनुरोध है, धन्यवाद।

(समाप्त)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, thank you. Mr. Rajeev Chandrasekhar, would you like to reply or say something?

SHRI RAJEEV CHANDRASEKHAR (KARNATAKA): Thank you, Sir. Let me start by thanking all my colleagues who participated in this debate. I am grateful to them for their support through the course of passage of this Private Bill for the last many months.

Sir, let me just start by saying, I think, the objective of this Bill, as I said very early on, was to start a debate in this House because since 1994 this House has said very little about Pakistan's role in sponsoring terrorism and Pakistan's role in claiming of thousands and countless of innocent lives in India.

(Contd. by RL/2T)

-BHS/RL-GS/3.55/2T

SHRI RAJEEV CHANDRASEKHAR (CONTD.): Sir, I would like to place in front of my friends four quotes. One is what Sushmaji said in the 71st UN General Assembly in September, 2016 and I quote, "We must acknowledge that terrorism is undoubtedly the biggest violation of human rights. It targets the innocent and kills indiscriminately. Terrorism has gone way beyond

affecting individuals or nations. It is a crime against humanity itself. But it is important to ask – who is behind this and who benefits from it? Terrorists do not own banks or weapons factories, so let us ask the real question: who finances these terrorists, who arms them and provides sanctuaries?" Sir, I am putting this quote here for us to just ponder because this is the thought that is also crossing, these are the questions that are being put by every man and woman in this country as they hear about terror acts regularly.

Sir, let me put another quote to you. This is by the former Prime Minister Smt. Indira Gandhi talking about the context in which India has never been the aggressor and she said in 1971 and I quote, "India always tries to be on the side of peace and negotiations and so on but of course we can't endanger our security in any way. We have never ever attacked anybody but we have been attacked many times."

Sir, in February, 2000, the then Prime Minister Atal Bihari Vajpayeeji did not mince words when he said and I quote again, "Pakistan is sponsoring cross-border terrorism as it has its internal compulsions. Pakistan has been smarting ever since its defeat in 1971 and the formation of Bangladesh, and now it has been humiliated in Kargil. Though the battle of Kargil is over, the war against terrorism will continue till Pakistan does not

stop sponsoring terrorism. There can be no meaningful talks with Pakistan till it stops cross-border terrorism."

Sir, the point here is, for seven decades, our neighbour has managed to leverage their sponsorship of terror as an instrument of state craft. This is the fact. This has been going on for seventy years. I think, like, my colleague, Maheshji said, it is now time for us, as a nation and as people and as Parliament, to say, 'Enough is enough'. Some of our Members were talking about various points and though questions are raised about whether there is any utility of this Bill. Sir, there is a utility of this Bill and the utility is very simple. Since 1994, the Parliament has not spoken about this issue and I think for the Parliament to speak about the fact that Pakistan is a state sponsor of terrorism is in itself a big thing. It may not translate into the necessary executive actions immediately on passing of the Bill or on the discussion of the Bill but the fact is that the Parliament of India and indeed the Rajya Sabha has not spoken on this issue since 1994. So, just by speaking, Sir, we are sending a message. So, I don't want to go on to extraordinary lengths to reinforce and re-emphasize the need for such a debate and need for such a Bill but I want to clearly address some of the doubts that have been raised by the Members because these are doubts that exist today even amongst some pockets in India. So, if you give me

some time, I would like to say this. One of the points like, for example, K.T.S. Tulsiji has said is, 'If the Executive has power so why should the Parliament do anything about it?' But that is precisely why this Bill is necessary. That is precisely why this debate is necessary because over the last seven decades, successive Executives have abrogated their responsibility in declaring and calling out Pakistan for being a state sponsor of terrorism. So, if the Executive does not want to do it then the Parliament can't just sit around and say, we will just standby, sit silently and have the Executive decide what the people of India want. So, Sir, there is a utility and this Parliament has a role to talk about Pakistan's role in terrorism regardless of what the Executive does or does not do. So, that argument, that the Executive has the power and the Parliament should sit on its seats and do nothing is, I think, the moot point.

There is another point raised again by our colleague saying, 'We need action, we don't need Bills.' But, that is, precisely what this Bill is supposed, to not allow the discourse to drift into. Today, Sir, when there is a terror act, we are left with two options. One is, you take a candle and do a candle-light vigilance and say, '*Aman Ki Asha*' or we say 'surgical strike' or a 'military action'. The whole contention of this Bill is to argue that we have a

broad space between doing nothing and doing military options and that is precisely what this Bill is about.

(Contd. by DC/2U)